दक्ष®

10 मई 2022 को जारी नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार

वर्ष 2019 का प्रश्न-पत्र हल एवं व्याख्या सहित

राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर द्वारा आयोजित

A Complete Book for

No.1

ग्रेड-2nd शिक्षक भर्ती

हिन्दी

खंड-II : स्नातक स्तर

अत्यन्त महत्त्वपूर्ण 180 अंक सुनिश्चित करें

- शब्द शक्ति, रीतियाँ, काव्यगुण-दोष, अलंकार, छंद व रस की महत्वपूर्ण परीक्षोपयोगी तालिकाएँ
- स्नातक स्तरीय हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रमुख कवियों व रचनाकारों की रचनाओं का सारांश व वस्तुनिष्ठ प्रश्न
- हिन्दी साहित्य के इतिहास से संबंधित परीक्षोपयोगी तालिकाएँ
- हिन्दी साहित्य के काल विभाजन का द्विपृष्ठीय विशेष चार्ट
- विभिन्न कहानियों का सारांश व वस्तुनिष्ठ प्रश्न
- गत वर्षों की परीक्षाओं में पूछे गए लगभग 80 % प्रश्न इस गाइड पर आधारित

Buy Online at : WWW.DAKSHBOOKS.COM

आचार्य संदीप मालाकार ● गणेश प्रजापत

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION, AJMER

SYLLABUS

for Examination for the post of

SR.TEACHER (GRADE-II)

SECONDARY EDUCATION DEPARTMENT

PAPER-II

खंड-II स्नातक स्तर

(अ) शब्द शक्तियों के भेद व उदाहरण

काव्य की रीतियाँ, काव्य गुण, काव्यदोष (श्रुतिकटुत्व, ग्राम्यत्व, अप्रतीतत्व, क्लिष्टत्व, अक्रमत्व तथा दुष्क्रमत्व)

अलंकार – श्लेष, यमक, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, विभावना, असंगति, संदेह, भ्रांतिमान, विरोधाभास व मानवीकरण।

छंद – द्रुतविलम्बित, हरिगीतिका, कवित्त, सवैया, दोहा, सोरठा व चौपाई

रस – रस का स्वरूप, रसावयव और रस–भेद

(ब) हिन्दी साहित्य का इतिहास – नामकरण, कालविभाजन,

आदिकाल – काव्य धाराएं, प्रवृत्तियां, प्रमुख रचनाएं एवं रचनाकार

भक्तिकाल – काव्य धाराएं, प्रवृत्तियां, प्रमुख रचनाएं एवं रचनाकार

रीतिकाल – काव्य धाराएं, प्रवृत्तियां, प्रमुख रचनाएं एवं रचनाकार

आधुनिक काल – पद्य का विकास – भारतेंदु युग, द्विवेद्वी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, नई कविता

आधुनिक काल – गद्य का विकास – कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध, संस्मरण

(स) हिन्दी भाषा का उद्‌भव एवं विकास, हिन्दी एवं उसकी बोलियों का सामान्य परिचय, देवनागरी लिपि

(द) कबीर ग्रन्थावली – साखी – प्रथम 5 अंग एवं प्रथम 10 पद (सं. श्यामसुन्दर दास)

तुलसीदास – रामचरितमानस (बालकाण्ड)

सूरदास – भ्रमरगीतसार (प्रथम 20 पद – सं. रामचन्द्र शुक्ल)

मीराबाई – मीरां पदावली (प्रथम 20 पद – सं. परशुराम चतुर्वेदी)

बिहारी रत्नाकर – (प्रथम 20 दोहे)

सूर्यमल्ल मीसण (मिश्रण) – वीर सतसई (प्रथम 20 दोहे– सं. नरोत्तमदास स्वामी, नरेन्द्र भानावत, लक्ष्मी कमल)

रामधारी सिंह दिनकर – कुरूक्षेत्र (प्रथम सर्ग)

जयशंकर प्रसाद – कामायनी (श्रद्धा सर्ग)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल – चिन्तामणि– (भाग 1) केवल उत्साह, श्रद्धा और भक्ति, लोभ और प्रीति

मोहन राकेश – लहरों के राजहंस

यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र' – खून का टीका

कहानियाँ – उसने कहा था	–	चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
पूस की रात	–	प्रेमचंद
पटाक्षेप नहीं होगा	–	हेतु भारद्वाज
उजाले के मुसाहिब	–	विजयदान देथा

For the competitive examination for the post of Senior Teacher:-

1. The question paper will carry maximum **300 marks**.
2. Duration of question paper will be **Two Hours Thirty Minutes**.
3. The question paper will carry **150 questions** of multiple choices.
4. Negative marking shall be applicable in the evaluation of answers. For every wrong answer one third of the marks prescribed for that particular question shall be deducted.
5. Paper shall include following subjects :-
   (i) Knowledge of Secondary and Senior Secondary Standard about relevant subject matter.
   (ii) Knowledge of Graduation Standard about relevant subject matter.
   (iii) Teaching Methods of relevant subject.

अनुक्रमणिका

अध्याय नं. अध्याय का नाम .... पृष्ठ नम्बर

❖ ग्रेड-2nd शिक्षक भर्ती परीक्षा 04 जुलाई, 2019 को आयोजित द्वितीय प्रश्न पत्र 'हिन्दी' का Part-II स्नातक स्तर सम्पूर्ण हल एवं व्याख्या P-1–P-10

Part-'II' स्नातक स्तर 1-432

1 शब्द शक्तियों के भेद व उदाहरण 1

- ❖ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर 6

2 काव्य की रीतियाँ, काव्य गुण एवं काव्यदोष (श्रुतिकटुत्व, ग्राम्यत्व, अप्रतीतत्व, क्लिष्टत्व, अक्रमत्व तथा दुष्क्रमत्व) 9

- ❖ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर 11
- ❖ काव्य गुण 12
- ❖ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर 15
- ❖ काव्य दोष 16
- ❖ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर 21

3 अलंकार का स्वरूप, परिभाषा एवं भेद 22

1. उपमा अलंकार 22
2. रूपक 24
3. उत्प्रेक्षा 25
4. यमक 25
5. श्लेष 26
6. विभावना 27
7. भ्रान्तिमान 28
8. सन्देह 28
9. असंगति 29
10. विरोधाभास 29
11. मानवीकरण 30
12. विशेषोक्ति अलंकार 30

- ❖ पूर्णोपमा 31
- ❖ लुप्तोपमा 31
- ❖ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर 36

4 छन्द का स्वरूप, परिभाषा एवं भेद 38

- ❖ परिभाषा 38
- ❖ प्रमुख छन्दों का परिचय 39
- ❖ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर 45

अध्याय नं.	अध्याय का नाम	पृष्ठ नम्बर
5	रस का स्वरूप, रसावयव व उसके भेद	48
	❖ प्रमुख रसों का विवेचन	51
	❖ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर	64
6	हिन्दी साहित्य का इतिहास : नामकरण, कालविभाजन	67
	❖ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर	75
	❖ हिन्दी साहित्य का आदिकाल (आदिकाल : काव्य धाराएँ, प्रवृत्तियाँ, प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार)	77
	❖ आदिकाल की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा साहित्यिक परिस्थितियाँ	79
	❖ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर	88
	❖ हिन्दी साहित्य का भक्तिकाल (भक्तिकाल : काव्य धाराएँ, प्रवृत्तियाँ, प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार)	91
	रामभक्ति काव्य, विशेषताएँ, प्रमुख कवि एवं रचनाएँ	98
	❖ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर	115
	❖ हिन्दी साहित्य का रीतिकाल	117
	(रीतिकाल : काव्य धाराएँ, प्रवृत्तियाँ, प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार)	117
	❖ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर	134
	❖ हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल (आधुनिक काल : पद्य का विकास - भारतेन्दु, युग, द्विवेद्धी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, नई कविता)	136
	❖ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर	158
	❖ हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल (आधुनिक काल : गद्य का विकास - कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध, संस्मरण)	161
	❖ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर (हिन्दी नाटक, गद्य, उपन्यास, कहानी)	198
	❖ प्रमुख साहित्यकार, जीवन काल एवं महत्त्वपूर्ण रचनाएँ	212
	❖ हिन्दी साहित्य के इतिहास पर आधारित अन्य महत्त्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर	219
7	हिन्दी भाषा का उद्भव व विकास, हिन्दी एवं उसकी बोलियों का सामान्य परिचय, देवनागरी लिपि	225
	❖ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर	236
8	कबीर : (1456-1575) कबीर ग्रन्थावली (श्यामसुन्दर दास)	238
	❖ सबद (पद-10) : सम्पादक श्यामसुन्दर दास	248
	❖ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर	252
9	तुलसीदास : (1534-1623) रामचरित मानस (बालकाण्ड)	254
	❖ श्रीरामवतार-वर्णन के प्रसंग में रामायण बालकाण्ड की संक्षिप्त कथा	256
	❖ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर	287

अध्याय नं. अध्याय का नाम .... पृष्ठ नम्बर

10 सूरदास : (1535-1620) भ्रमरगीत सार (प्रथम 20 पद-रामचन्द्र शुक्ल) 290
- ❖ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर 302

11 मीराँबाई : (1555-1603) मीराँ पदावली (प्रथम 20 पद-परशुराम चतुर्वेदी) 305
- ❖ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर 315

12 बिहारी : (1652-1720) बिहारी रत्नाकर (प्रथम 20 दोहे) 317
- ❖ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर 325

13 सूर्यमल्ल मिश्रण : (1815-1868) वीर सतसई (प्रथम 20 दोहे) 327
- ❖ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर 332

14 रामधारी सिंह 'दिनकर' : (1908-1974) कुरुक्षेत्र (प्रबंध काव्य, प्रथम सर्ग) 334
- ❖ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर 343

15 जयशंकर प्रसाद : (1889-1937) कामायनी (श्रद्धा सर्ग) 345
- ❖ कामायनी (जयशंकर प्रसाद) श्रद्धा सर्ग 349
- ❖ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर 354

16 आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : (1884-1941)
चिन्तामणि, भाग-1 निबंध (उत्साह, श्रद्धा भक्ति व लोभ और प्रीति) 356
- ❖ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर 382

17 मोहन राकेश : (1925-1972) लहरों के राजहंस 385
- ❖ मूल कथा का सार 386
- ❖ लहरों के राजहंस महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर 389
- ❖ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर 390

18 यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र' : (1932-2009) खून का टीका 392
- ❖ 'यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र' के उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन 393
- ❖ खून का टीका मूल उपन्यास 394
- ❖ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर 403

19 कहानियाँ 405
- **1** उसने कहा था : चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' (1883-1922) 405
- ❖ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर 410
- **2** पूस की रात : प्रेमचंद (1880-1936) 412
- ❖ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर 414
- **3** पटाक्षेप नहीं होगा : हेतु भारद्वाज (1937- ....) 416
- ❖ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर 421
- **4** उजाले के मुसाहिब : विजयदान देथा (1926-2013) 425
- ❖ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर 431

1 शब्द शक्तियों के भेद व उदाहरण

शब्द शक्ति का अर्थ और परिभाषा- शब्द शक्ति का अर्थ है- शब्द की अभिव्यंजक शक्ति। शब्द का कार्य किसी अर्थ की अभिव्यक्ति तथा उसका बोध कराना होता है। इस प्रकार शब्द एवं अर्थ का अभिन्न सम्बन्ध है। शब्द एवं अर्थ का सम्बन्ध ही **शब्द शक्ति** है। शब्दार्थ सम्बन्ध शक्ति। अर्थात् (बोधक) शब्द एवं बोध्य अर्थ के सम्बन्ध को शब्द शक्ति कहते हैं। शब्द शक्ति की परिभाषा इस प्रकार भी की जा सकती है- शब्दों के अर्थों का बोध कराने वाले अर्थ-व्यापार को शब्द शक्ति कहते हैं।

शब्द शक्ति के भेद—शब्द के विभिन्न प्रकार के अर्थों के आधार पर शब्द शक्ति के प्रकारों का निर्धारण किया गया है। शब्द के जितने प्रकार के अर्थ होते हैं, भाषा के जितने प्रकार के अभिप्राय होते हैं, उतने ही प्रकार की शब्द शक्तियाँ होती हैं। शब्द के तीन प्रकार के अर्थ स्वीकार किए गए हैं— **1. वाच्यार्थ या अभिधेयार्थ, 2. लक्ष्यार्थ, 3. व्यंग्यार्थ।** इस अर्थों के आधार पर तीन प्रकार की शब्द शक्तियाँ मानी गई हैं—**(1) अभिधा, (2) लक्षणा, (3) व्यंजना।** कुछ विद्वानों ने तात्पर्या नामक चौथी शब्द शक्ति भी स्वीकार की है, जिसका सम्बन्ध वाक्य से होता है।

1. अभिधा शब्द शक्ति—शब्द को सुनने अथवा पढ़ने के पश्चात् पाठक अथवा श्रोता को शब्द का जो लोक प्रसिद्ध अर्थ तत्क्षण ज्ञात हो जाता है, वह अर्थ शब्द की जिस सीमा द्वारा मालूम होता है, उसे अभिधा शब्द शक्ति कहते हैं।

'अभिधा' द्वारा अनेकार्थ में एकार्थ का निर्णय अनेक प्रकार से हुआ करता है। इसी आधार पर विद्वान् अभिधा के बारह या तेरह भेद करते हैं। **काव्य-प्रभाकर** पुस्तक में इन भेदों का वर्णन इस प्रकार किया गया है-

है संजोग, वियोग अरु साहचरज सु विरोध।
प्रकरन, अरथ-प्रसंग पुनि चिह्न सामरथ बोध।।
औचित्यहु पुनि देस-बल काल भेद सुर फेर।
द्वादस अभिधा शक्ति के भेद कहैं कवि हेर।।

2. लक्षणा शब्द शक्ति—जहाँ मुख्य अर्थ में बाधा उपस्थित होने पर रुढि अथवा प्रयोजन के आधार पर मुख्य अर्थ से सम्बन्धित अन्य अर्थ को लक्ष्य किया जाता है, वहाँ लक्षणा शब्द शक्ति होती है। जैसे- **मोहन गधा है।** यहाँ 'गधे' का लक्ष्यार्थ है 'मूर्ख'।

1. मुख्यार्थ में बाधा या व्याघात हो अर्थात् शब्द का प्रचलित अर्थ लेने में व्याघात उत्पन्न होता हो।
2. लिया गया अन्य अर्थ मुख्यार्थ से सम्बन्धित हो।
3. इस लक्ष्यार्थ को ग्रहण करने का या तो कोई प्रयोजन हो अथवा कोई रूढ़ि। भिखारीदास जी इस तथ्य को इस प्रकार कहते हैं-

मुख्य अर्थ को बाध करि, सब्द लच्छना होत।
रूढि और प्रयोजनवती, है लच्छना उदोत।।

3. व्यंजना शब्द शक्ति—अभिधा और लक्षणा के विराम लेने पर जो एक विशेष अर्थ निकलता है, उसे व्यंग्यार्थ कहते हैं और जिस शक्ति के द्वारा यह अर्थ ज्ञात होता है, उसे व्यंजना शब्द शक्ति कहते हैं। जैसे-**घर गंगा में है।** यहाँ व्यंजना है कि घर गंगा समीप के क्षेत्र में है।

शब्द शक्ति का महत्त्व—किसी शब्द का महत्त्व उसमें निहित अर्थ पर निर्भर होता है। बिना अर्थ के शब्द अस्तित्व-विहीन एवं निरर्थक होता है। शब्द शक्ति के शब्द में निहित इसी अर्थ की शक्ति पर विचार किया जाता है। काव्य में प्रयुक्त शब्दों के अर्थ ग्रहण से ही काव्य आनन्ददायक बनता है।

लक्षणा शब्द शक्ति के भेद

1. लक्ष्यार्थ के आधार पर—इस आधार को लेकर लक्षणा के दो भेद हैं—**(i) रूढ़ा लक्षणा (ii) प्रयोजनवती लक्षणा।**

(i) रूढ़ा लक्षणा—जहाँ मुख्यार्थ में बाधा होने पर रूढि के आधार पर लक्ष्यार्थ ग्रहण किया जाता है, वहाँ रूढा लक्षणा होती है। जैसे-**पंजाब वीर है**-इस वाक्य में पंजाब का लक्ष्यार्थ है-पंजाब के निवासी। यह अर्थ रूढ़ि के आधार पर ग्रहण किया गया है, अतः रूढा लक्षणा है।

अन्य उदाहरण जैसे **'राजस्थान वीर देश है'**-इस वाक्य में मुख्यार्थ की बाधा होती है क्योंकि कोई प्रान्त स्वयं वीर नहीं हो सकता। 'राजस्थान के निवासी वीर हैं' ऐसा अर्थ लक्षणा द्वारा ग्रहण किया जाता है, अतः यहाँ रूढ़ि लक्षणा है। जायसी के पद्मावत का उदाहरण लीजिए—

'करहि तुषार पवन सों रीसा'

यहाँ पर तुषार का अर्थ दंश से न लेकर उस देश के घोड़े से लिया गया है अतः रूढ़ि लक्षणा है। हिन्दी में जितने मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ प्रचलित है एवं लगभग सभी प्रकार के प्रयोग हैं। हरिऔधजी ने इस शैली को अत्यधिक अपनाया। उदाहरण के लिए-

शब्द शक्ति की परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तालिका

शब्द शक्ति का नाम एवं भेद	लक्षण	उदाहरण
अभिधा, काव्य-प्रभाकर द्वारा दिया भेद- है संजोग, वियोग अरु साहचरज सु विरोध। प्रकरन, अरथ-प्रसंग पुनि चिह्न सामरथ बोध।। औचित्यहु पुनि देस-बल काल भेद सुर फेर। द्वादस अभिधा शक्ति के भेद कहैं कवि हेर।।	मुख्यार्थ या लोक-प्रसिद्ध अर्थ को सूचित करने वाली शब्द-शक्ति 'अभिधा' कहलाती है। संज्ञा रूप को बताने वाली शक्ति '**अभिधा**' होती है।	❖ गाय दूध देती है। ❖ राम लक्ष्मण वन जा रहे हैं। ❖ रमेश बड़ा नटखट लड़का है।
लक्षणा **(i) रूढि लक्षणा** **(ii) प्रयोजनवती लक्षणा**	जहाँ मुख्य अर्थ में बाधा उपस्थित होने पर रूढि या प्रयोजन के आधार पर मुख्य अर्थ से सम्बन्धित अन्य अर्थ को लक्ष्य किया जाये। भिखारीदास जी इस तथ्य को इस प्रकार कहते हैं- **मुख्य अर्थ को बाध करि, शब्द लच्छना होत।** **रूढ़ि और प्रयोजनवती, है लच्छना उदोत।।**	❖ उषा सुनहले तीर बरसाती, जय लक्ष्मी-सी उदित हुई। उधर पराजित काल-रात्रि भी जल में अन्तर्निहित हुई।। ❖ फली सकल मन-कामना, लूट्यौ अगणित चैन। आजु-आचै हरि रूप सखि, भए प्रफुल्लित नैन।।
रूढ़ि लक्षणा	जहाँ मुख्यार्थ को छोड़कर अन्यार्थ किसी रूढ़ि के कारण ग्रहण किया जाए वहाँ रूढ़ि लक्षणा होती है।	❖ बेहतर दुखे किसी दिल में, भले ही पड़ जाय छाला।। ❖ जीभ सी कुञ्जी पाकर वे, लगाएँ क्यों मुँह में ताला।।
प्रयोजनवती लक्षणा	जहाँ किसी विशेष प्रयोजन की सिद्धि के लिए लक्षणा का प्रयोग किया जाए जैसे—किसी को 'गधा', 'उल्लू' आदि कह देना उसकी मूर्खता प्रकट करने के प्रयोजनार्थ होता है।	❖ शेर शिवा ने अफजल गज को पल में किया पराजित।
गौणी-रूढ़ि लक्षणा	जहाँ मुख्यार्थ और लक्ष्यार्थ में सादृश्य सम्बन्ध हो, अर्थात् दोनों गुणों में समानता हो।	❖ चिड़ियों से मैं बाज लड़ाऊँ
शुद्धा-रूढ़ि लक्षणा	जहाँ मुख्यार्थ और लक्ष्यार्थ में कोई समानता नहीं हो अपितु उनमें सादृश्य से अलग संबंध हो।	❖ वीर पंजाब जाग उठा।
गौणी-प्रयोजनवती लक्षणा	जहाँ सादृश्य अथवा समानता के गुण के कारण लक्ष्यार्थ की प्रतीति हो। 'मेवाड़-केसरी' प्रयोग में शेर की वीरता, दृढ़ता, साहस आदि गुणों के सादृश्य से 'मेवाड़-केसरी' का अर्थ 'महाराणा प्रताप' लिया जाएगा।	❖ है करती दुःख दूर सभी उनके मुख-पंकज की सुधराई। याद नहीं रहती दुःख की, लख के उसकी मुखचन्द्र जुन्हाई।।
सारोपा	जहाँ सादृश्य सम्बन्ध प्रकट करने के लिए उपमान-उपमेय दोनों का कथन किया जाता हो। जैसे—'उद्योगी पुरुष सिंह लक्ष्मी को पाता है'	❖ "सिंधु-सेज पर धरा-वधू अब। तनिक संकुचित बैठी सी।। प्रलय-निशा की हलचल स्मृति में। मान किये सी ऐंठी सी।।"
साध्यवसाना	सादृश्य-सम्बन्ध प्रदर्शित करने में जब उपमेय का उपमान में अध्यवसान या विलीनीकरण हो जाता है, तब साध्यवसाना गौणी लक्षणा होती है।	❖ "हाय मेरे सामने ही प्रणय का ग्रन्थि-बन्धन हो गया, वह नव कमल। मधुप सा मेरा हृदय लेकर किसी अन्य मानस का विभूषण हो गया।।"
शुद्धा-लक्षणा	जब सादृश्य सम्बन्ध के अतिरिक्त किसी अन्य सम्बन्ध से अर्थ की प्रतीति हो तब 'शुद्धा' लक्षणा होती है।	❖ अबला जीवन हाय ! तुम्हारी यही कहानी। आँचल में है दूध और आँखों में पानी।।

6 हिन्दी साहित्य का इतिहास : नामकरण, कालविभाजन

इतिहास : अर्थ एवं स्वरूप

शाब्दिक दृष्टि से 'इतिहास का अर्थ है- **'ऐसा ही था'** या **'ऐसा ही हुआ'**। इससे दो बातें स्पष्ट हैं-एक तो यह कि इतिहास का सम्बन्ध अतीत से है, दूसरे यह कि उसके अन्तर्गत केवल वास्तविक या यथार्थ घटनाओं का समावेश किया जाता है। **लाक्षणिक अर्थ में 'इतिहास' का प्रयोग अतीत की घटनाओं के विवरण के स्थान पर स्वयं अतीतकालीन घटनाओं और व्यक्तियों के लिए भी होता है,** जैसे-'महात्मा गाँधी ने भारत के नये इतिहास का निर्माण किया' या 'सम्राट अशोक भारत के इतिहास-निर्माता थे' आदि वाक्यों में; किन्तु शास्त्रीय या वैज्ञानिक विवेचन में लाक्षणिक प्रयोग अग्राह्य या त्याज्य ही समझे जाते हैं।

इतिहास के प्रति भारतीय दृष्टिकोण—इतिहास के प्रति भारतीय दृष्टिकोण प्रायः आदर्शमूलक एवं अध्यात्मवादी रहा है, इसीलिए उसमें भौतिक जगत् की स्थूल घटनाओं में भी आध्यात्मिक तत्त्वों व प्रवृत्तियों के अनुसंधान की प्रवृत्ति रही है। भारतीय सभ्यता एवं सस्कृति में प्रायः सामयिक तत्त्वों की अपेक्षा चिरन्तन मूल्यों को अधिक महत्त्व दिया जाता रहा है, अतः यहाँ के प्राचीन इतिहासकारों ने अतीत की व्याख्या भी इसी दृष्टिकोण से की अर्थात् वे परिवर्तनशील अतीत में से भी उन प्रवृत्तियों का अनुसंधान करते रहे जो मनुष्य को स्थाई एवं अमर बनाती हैं।

इतिहास के प्रति पाश्चात्य दृष्टिकोण—जहाँ भारतीय इतिहासकारों के दृष्टिकोण में आदर्शवादिता की प्रमुखता रही, वहीं पाश्चात्य इतिहासकार प्रायः यथार्थवादी दृष्टिकोण से अनुप्राणित रहे हैं। 'इतिहास' के प्रथम व्याख्याता यूनानी विद्वान हिरोदोतस ने इसे 'खोज', 'गवेषणा' या 'अनुसंधान' के अर्थ में ग्रहण करते हुए इसके चार लक्षण निर्धारित किये थे-एक तो यह कि इतिहास वैज्ञानिक विद्या है, अतः इसकी पद्धति आलोचनात्मक होती है।

साहित्य का इतिहास से सम्बन्ध

सामान्यतः 'इतिहास' शब्द से राजनीतिक व सांस्कृतिक इतिहास का ही बोध होता है; किन्तु वास्तवकिता यह है कि सृष्टि की कोई भी वस्तु ऐसी नहीं है जिसका इतिहास से सम्बन्ध न हो। अतः साहित्य भी इतिहास से असम्बद्ध नहीं है।

यद्यपि अंग्रेजी-साहित्य के विभिन्न इतिहासकारों द्वारा यह धारणा बहुत पहले प्रचलित हो चुकी थी कि किसी भी जाति के साहित्य का इतिहास उस जाति के सामाजिक एवं राजनीतिक वातावरण को ही प्रतिबिम्बित करता है या साहित्य की प्रवृत्तियाँ सम्बन्धित समाज की प्रवृत्तियों की सूचक होती हैं, फिर भी इस धारणा को एक सुव्यवस्थित सिद्धान्त के रूप में **प्रतिष्ठित करने का श्रेय फ्रेंच विद्वान तेन (Taine) को है जिन्होंने अपने अंग्रेजी-साहित्य के इतिहास में प्रतिपादित किया कि साहित्य की विभिन्न प्रवृत्तियों के मूल में मुख्यतः तीन प्रकार के तत्त्व सक्रिय रहते हैं-जाति (race), वातावरण (milieu), क्षण-विशेष (moment)। तेन ने अपनी व्याख्या के द्वारा यह भलीभाँति स्पष्ट किया कि किसी साहित्य के इतिहास को समझने के लिए उससे सम्बन्धित जातीय परम्पराओं, राष्ट्रीय और सामाजिक वातावरण एवं सामयिक परिस्थितियों का अध्ययन-विश्लेषण आवश्यक है।**

इतिहास लेखन की परम्परा और प्रसिद्ध इतिहास लेखक

हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन का वास्तविक सूत्रपात 19वीं शताब्दीं से माना जाता है। यद्यपि मध्यकाल में रचित वार्ता साहित्य; यथा-चौरासी वैष्णवन की वार्ता, दो सौ बावन वैष्णव की वार्ता, भक्तमाल आदि में अनेक कवियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय मिल जाता है; किन्तु इतिहास लेखन के लिए जो कालक्रमानुसार वर्णन अपेक्षित होता है, उसका नितान्त अभाव इन वार्ता ग्रन्थों में है, अत: इन्हें साहित्य का इतिहास ग्रन्थ नहीं माना जा सकता है। हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखकों में जो उल्लेखनीय हैं, उनका संक्षिप्त विवरण क्रमशः इस प्रकार है—

1. गार्सा-द-तासी—हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा का सूत्रपात भी किसी हिन्दी भाषी व्यक्ति द्वारा न होकर फ्रेंच विद्वान 'गार्सा-द-तासी' द्वारा रचित **'इस्त्वार द ला लितरेव्यूर ऐन्दुई ऐन्दुस्तानी'** नामक ग्रन्थ से हुआ, जिसकी रचना दो भागों में की गई है। इनमें से प्रथम भाग का प्रकाशन सन् 1839 ई. में और द्वितीय भाग का प्रकाशन सन् 1847 ई. में हुआ। इस ग्रन्थ में हिन्दी और उर्दू के अनेक कवियों का विवरण वर्णानुक्रम से प्रस्तुत किया गया है। यद्यपि गार्सा-द-तासी के इस इतिहास ग्रंथ में अनेक कमियाँ हैं; यथा—काल विभाजन का कोई प्रयास न करना, कवियों का कालक्रमानुसार वर्गीकरण न करना तथा युगीन परिस्थितियों का विवेचन न करना—तथापि इस ग्रंथ में पहली बार हिन्दी काव्य के इतिहास को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। साथ ही कवियों के रचनाकाल का निर्देश भी किया गया है अत: इसे इतिहास ग्रंथ कहने में किसी को संकोच नहीं है।

2. शिवसिंह सेंगर—हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा में दूसरी महत्त्वपूर्ण कृति **'शिवसिंह सरोज'** है जिसकी रचना शिवसिंह

हिन्दी साहित्य का भक्तिकाल

(भक्तिकाल : काव्य धाराएँ, प्रवृत्तियाँ, प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार)

भक्तिकाव्य

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भक्तिकाल की समय सीमा 1375 वि. से 1700 वि. (1318-1643 ई.) तक मानी है। भक्तिकाल का विवेचन करने से पूर्व भक्ति भावना की परम्परा और परिवेश की संक्षिप्त जानकारी कर लेना आवश्यक है। 'भक्ति' का सर्वप्रथम उल्लेख **'श्वेताश्वेतर उपनिषद्'** में मिलता है। दक्षिण भारत में द्रविड़ लोगों में भक्ति परम्परा का सूत्रपात ईसा से कई शताब्दी पहले ही हो चुका था। ईसवी सन् के प्रारम्भ में उत्तर और दक्षिण की भक्ति परम्पराओं का मिलन हो चुका था 'पूजा' को भक्ति का प्रुख साधन माना गया। **'पांचरात्र'** का भी भक्ति भावना के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान है। संहिताओं ने देवालयों के निर्माण एवं उनमें आराध्य देव की प्रतिष्ठा एवं विधिवत् पूजन-अर्चन का मार्ग प्रशस्त किया। दक्षिण में आलवार भक्तों की परम्परा 7वीं शती से बराबर चली आ रही थी। **'आलवार'** वस्तुतः वैष्णवों का तमिल नाम है। शैवों को वहाँ **'नायनमार'** कहा जाता है। आलवारों ने वेद, उपनिषद् एवं गीता से विचार ग्रहण किए और पद शैली में गीत लिखे जो अत्यन्त भावपूर्ण तमिल भाषा में लिखे गए हैं। **आलवार भक्तों** की संख्या **बारह** मानी गई है तथा इनके पदों का संकलन **'दिव्य प्रबन्धम्'** नाम से किया गया है जिसमें लगभग चार हजार पद हैं।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने **भक्ति आन्दोलन** के सूत्रपात के लिए तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों को उत्तरदायी माना है। उनके मतानुसार—''देश में मुसलमानों का राज्य प्रतिष्ठित हो जाने पर हिन्दू जनता के हृदय में गौरव, गर्व और उत्साह के लिए वह अवकाश न रह गया।.....अपने पौरुष से हताश जाति के लिए भगवान की शक्ति और करुणा की ओर ध्यान ले जाने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग ही क्या था।''

नाथपंथियों, सिद्धों, बौद्धों, योगियों की बानी में हृदय के प्रकृत भावों—भक्ति, प्रेम का कोई स्थान न था। शास्त्रज्ञ विद्वानों पर इनकी बानी का प्रभाव रंचमात्र भी न पड़ा और वे ब्रह्मसूत्रों, उपनिषदों, गीता आदि पर भाष्य लिखकर परम्परागत भक्तिमार्ग के सिद्धान्त पक्ष को विकसित करते रहे।

भक्ति भावना मूलतः दक्षिण भारत में उत्पन्न हुई। इस सम्बन्ध में कहा गया है कि—**भक्ति द्राविड़ी ऊपजी लाए रामानन्द।** भक्ति को जो स्रोत दक्षिण भारत से धीरे-धीरे उत्तर भारत की ओर आ रहा था उसे राजनीतिक परिवर्तन के कारण शून्य पड़ते हुए जनता के हृदय क्षेत्र में फैलने के लिए पूरा स्थान मिला। रामानुजाचार्य ने शास्त्रीय पद्धति से सगुण भक्ति का निरूपण किया और जनता इस भक्तिमार्ग की ओर आकर्षित होती चली गई।

भक्ति आन्दोलन की पृष्ठभूमि में हमें उन आचार्यों का भी योगदान नहीं भूलना चाहिए जिन्होंने विभिन्न वादों का प्रवर्तन किया। इनमें से प्रमुख हैं—

1. **मध्वाचार्य**—जिन्होंने गुजरात में **द्वैतवादी** वैष्णव सम्प्रदाय चलाया।
2. **जयदेव**—जिन्होंने पूर्वी भारत में कृष्ण प्रेम के गीत गाए, जिनका अनुसरण विद्यापति ने किया।
3. **रामानन्द**—जो रामानुजाचार्य की शिष्य परम्परा में हुए तथा जिन्होंने रामानन्दी सम्प्रदाय खड़ा कर दिया और विष्णु के अवतार राम की उपासना पर बल दिया।
4. **वल्लभाचार्य**—जो शुद्ध द्वैतवाद के कृष्ण भक्त आचार्य हुए जिन्होंने कृष्णोपासना पर बल दिया।
5. **नामदेव**—महाराष्ट्र के प्रसिद्ध भक्त नामदेव ने भक्तिमार्ग को महत्त्व दिया।

मध्यकाल को दो खण्डों में विभक्त किया गया है—पूर्व मध्यकाल एवं उत्तर मध्यकाल। **पूर्व मध्यकाल को भक्तिकाल तथा उत्तर मध्यकाल को रीतिकाल कहा जाता है।** आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सम्वत् 1375 वि. से 1700 वि. तक के काल-खण्ड को भक्तिकाल कहा है। उनके अनुसार इस काल-खण्ड में भक्ति भावना की प्रधानता थी इसलिए प्रवृत्ति की दृष्टि से इसका यह नामकरण उचित है। डॉ. नगेन्द्र ने अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से **1350 ई. से 1650 ई. तक भक्तिकाल की समय सीमा स्वीकार की है।**

भक्तिकाल का नामकरण और काव्य-परम्पराएँ

हिन्दी साहित्य के काल-विभाजन के आधार पर मध्यकाल के पूर्वभाग को भक्तिकाल या भक्तियुग नाम से अभिहित किया जाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने मध्यकाल के दो खण्ड किए हैं—पूर्व मध्यकाल और उत्तर मध्यकाल। इसमें पूर्व मध्यकाल की कालावधि वि.सं. 1375 से 1700 तक मानी है और इसे ही भक्तिकाल कहा है।

भक्तिकाल नामकरण

आचार्य शुक्ल ने साहित्यिक प्रवृत्ति के आधार पर यह नामकरण किया है। मध्यकाल के पूर्वभाग में अधिकतर कवि भक्ति-भावना और अध्यात्म-चेतना का परिचय दे रहे थे। इन कवियों पर धार्मिक आस्था का पूर्ण प्रभाव था। उस समय वैष्णव भक्ति का अत्यधिक प्रसार हो रहा था। इसी विशेषता एवं युगीन प्रवृत्ति को लक्ष्य कर आचार्य शुक्ल ने इसका नाम **भक्तिकाल** रखा। डॉ. ग्रियर्सन ने इस काल को क्रमशः पन्द्रहवीं शती का धार्मिक पुनरुत्थान, मलिक मुहम्मद का प्रेमाख्यान, ब्रज की कृष्ण भक्ति, मुगल दरबार और तुलसीदास—इन पाँच भागों में विभक्त किया है; परन्तु यह विभाजन एवं नामकरण परवर्ती आचार्यों ने सर्वथा असंगत बताया है।

भक्तिकालीन काव्य-परम्पराएँ

भक्तिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियों को देखकर आचार्यों ने इसकी विविध परम्पराओं को स्वीकार किया है। डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त ने इसकी आठ-नौ परम्पराओं का उल्लेख किया है; परन्तु अन्य विद्वान् केवल चार

9

तुलसीदास : (1534-1623)

रामचरित मानस (बालकाण्ड)

तुलसी का जीवन-परिचय

तुलसीदास

अधिकांश विद्वानों का मत है कि तुलसीदास का जन्म सम्वत्-1554 ई. में बांदा जिले के राजापुर नामक स्थान पर हुआ था। तुलसी सरयूपारी ब्राह्मण थे। इनके बचपन का नाम **रामबोला** था। इनके पिता का नाम आत्माराम व इनकी माता का नाम हुलसी था। ऐसा माना जाता है कि तुलसीदास का जन्म मूल नक्षत्र में हुआ था, अतः बचपन में उन्हें माता-पिता ने त्याग दिया था और इस प्रकार उन्हें माता-पिता के स्नेह से वंचित होना पड़ा। सौभाग्य से इनकी भेंट **बाबा नरहरिदास** से हो गई, जिनके साथ ये तीर्थस्थान घूमते रहे और विद्याध्ययन भी करते रहे। इन्हीं से इन्होंने **'रामकथा'** का अध्ययन भी किया। इसके बाद काशी गये और वहाँ पर शेष सनातन नामक विराट विद्वान् से वेद, शास्त्र, दर्शन, पुराणों का गंभीर अध्ययन किया। अपनी पत्नी **रत्नावली** के द्वारा अपने मोह को लेकर फटकारे जाने पर यह तुरन्त काशी गये व संन्यासी हो गये व कुछ समय बाद अयोध्या गये व वहीं पर संवत्-1631 ई. में **'रामचरिमानस'** की रचना की।

तुलसी का भाव-पक्ष

तुलसीदास राम के अनन्य भक्त थे। ये भगवान के निर्गुण व सगुण दोनों ही रूपों को मानते थे पर भक्ति व उपासना क्षेत्र में इन्हें सगुण रूप ही विशेष प्रिय है, क्योंकि इनका मानना था कि निर्गुण भगवान ने इन जैसे भक्तों की रक्षा के लिए ही सगुण रूप धारण किया है। इनकी भक्ति सेवक भाव की है। इस भक्ति के साथ ही विनय व दीनता का योग स्वाभाविक है। राम ही इनके सब कुछ हैं। ये संसार के सारे नातों को राम के ही माध्यम से मानते हैं। इनकी राम भक्ति विविध बाह्य आडम्बरों से दूर है।

इनकी भक्ति की सबसे प्रधान विशेषता उनकी सर्वांगपूर्णता है। उसमें धर्म और ज्ञान का सुन्दर समन्वय है। इन्होंने मर्यादा पुरुषोत्म राम के लोकपावन चरित्र का वर्णन किया है। जीवन का ऐसा कोई व्यापार नहीं है, जो तुलसी की पैनी दृष्टि से बच गया हो। इनके राम परम ब्रह्म होते हुए भी गृहस्थ थे। इन्होंने पारिवारिक सम्बन्धों के आदर्श चरित्र को हमारे सामने प्रस्तुत किया है। साथ ही धार्मिक, सामाजिक और दार्शनिक क्षेत्र में समन्वय स्थापित किया है।

तुलसी का कला पक्ष

तुलसीदास ने अवधी व ब्रज दोनों ही भाषा में काव्य रचना की है। उन्होंने विभिन्न ग्रन्थों में अलग-अलग शैलियों का प्रयोग किया है। इनकी रचनाओं में सभी रस पाए जाते हैं; किन्तु संयोग शृंगार पूर्ण विकसित रूप में नहीं मिलता, क्योंकि इन्होंने मर्यादावादी राम का वर्णन किया है। अलंकार के अन्तर्गत सभी अलंकारों का प्रयोग किया है; किन्तु रूपक, उपमा व उत्प्रेक्षा अलंकारों का प्रयोग अधिक किया है। इन्होंने दोहा, चौपाई, छप्पय, कवित्त छन्दों में गेय पद की रचना की तथा गीति, मुक्तक व प्रबंध काव्य की रचना की है।

तुलसी की रचनाएँ

(1) **रामचरितमानस**—इसमें रामचन्द्र का चरित्र विस्तार से वर्णित है। इसकी भाषा अवधी है। यह जनता में बहुत प्रसिद्ध प्रबन्ध काव्य है।

(2) **विनय-पत्रिका**—इसमें विनय सम्बन्धी पद हैं तथा दीनता का भावपूर्ण वर्णन किया गया है।

(3) **गीतावली**—इसमें श्रीराम चरित्र सम्बन्धी फुटकर पदों का संग्रह है तथा यह ब्रज भाषा में लिखी गई रचना है।

(4) **कृष्ण गीतावली**—इसमें कृष्ण चरित्र के फुटकर पद हैं।

(5) **कवितावली**—इसमें रामचरित्र के फुटकर कवित्त नामक छन्द हैं तथा इसकी रचना ब्रजभाषा में की गई है। अन्त में विनय व कलियुग आदि के वर्णन के छन्द हैं।

(6) **दोहावली**—इसमें अनेक विषयों के दोहे संगृहीत हैं।

(7) **बरवै रामायण**—इसमें बरवै छन्द में राम चरित्र वर्णित है।

इसके अतिरिक्त तुलसी सतसई, रामाज्ञा प्रश्न, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, वैराग्य संदीपनी, रामलला नहछू, हनुमान बाहुक रचनाएँ हैं। कई विद्वानों ने और भी रचनाएँ बतलाई हैं; किन्तु सभी विद्वान् उन पर एकमत नहीं हैं।

बालकाण्ड वाल्मीकि कृत रामायण और गोस्वामी तुलसीदास कृत श्री रामचरित मानस का प्रथम भाग (काण्ड या सोपान) है। बालकाण्ड में प्रभु श्री राम के जन्म से लेकर राम सीता विवाह तक के घटनाक्रम आते हैं। गोस्वामी तुलसीदास कृत श्री राम चरित मानस के बाल काण्ड में 7 श्लोक, 341 दोहा, 25 सोरठा, 39 छंद-39 एवं 358 चौपाई है।

19 कहानियाँ

1 उसने कहा था : चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' (1883-1922)

लेखक-परिचय

चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'

'गुलेरी' का जन्म 1883 में जयपुर में हुआ था। वे प्रतिभायुक्त थे। सोलह वर्ष की अवस्था में ही प्रयाग विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में उन्होंने एण्ट्रेंस की परीक्षा पास की। प्रयाग विश्वविद्यालय से ही उन्होंने बी.ए. की परीक्षा भी प्रथम श्रेणी में पास की। तदनन्तर मेयो कॉलेज, अजमेर में संस्कृत के प्रधान अध्यापक नियुक्त हो गए। सन्-1920 में हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस में **'कॉलेज ऑफ ओरियण्टल लर्निंग एण्ड थियोलाजी'** के प्रिंसिपल नियुक्त हुए; किन्तु 1922 में उनकी असामयिक मृत्यु हो गई।

रचनाएँ—'गुलेरी' ने अपने जीवन-काल में केवल तीन कहानियाँ लिखीं—'सुखमय जीवन', 'बुद्धू का काँटा' और 'उसने कहा था'। 'उसने कहा था' हिन्दी की अमर कहानियों में से है। इस कहानी पर फिल्म भी बन चुकी है। 'गुलेरी' हिन्दी के उच्चकोटि के निबंध लेखक भी थे।

'गुलेरी' की केवल उक्त तीन कहानियों के उद्धरण देकर उनकी कहानी कला के सम्बन्ध में कोई निश्चित दृष्टिकोण बना पाना संभव नहीं है, पर इतना अवश्य है कि वह कुशल दृष्टि वाले कहानीकार थे। व्यंजना को वे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मानते थे। इसका उदाहरण है 'उसने कहा था'। मानवीय संवेदनाओं के चित्र खींचने में उन्हें कुशलता प्राप्त थी। क्रमबद्धरूप में कैशोर्य-प्रेम के विकास की पूर्णता पहली कहानी से चलकर तीसरी कहानी में अपना चरम बिन्दु पाती है। चरित्रों का अध्ययन किसी विशेष समस्या के अन्तर्गत न करके भावनात्मक परिवेश में करते थे।

आगे की पढ़ाई के लिए वे इलाहाबाद आ गए जहाँ प्रयाग विश्वविद्यालय से बी.ए. किया। उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से एम.ए. किया। चाहते हुए भी वे आगे की पढ़ाई परिस्थितिवश जारी नहीं रख पाए हालाँकि उनके स्वाध्याय और लेखन का क्रम अबाध रूप से चलता रहा। बीस वर्ष की उम्र के पहले ही उन्हें जयपुर की वेधशाला के जीर्णोद्धार तथा उससे सम्बन्धित शोधकार्य के लिए गठित मण्डल में चुन लिया गया और कैप्टन गैरेट के साथ मिलकर उन्होंने 'द जयपुर ऑब्जरवेटरी एण्ड इट्स बिल्डर्स' शीर्षक अंग्रेजी ग्रन्थ की रचना की।

अपने अध्ययन काल में ही उन्होंने सन् 1900 में जयपुर में नागरी मंच की स्थापना में योग दिया और सन् 1902 से मासिक पत्र 'समालोचन' के सम्पादन का भार भी सँभाला। कुछ वर्ष काशी की नागरी प्रचारिणी सभा के सम्पादक मंडल में भी उन्हे सम्मिलित किया गया। उन्होंने देवी प्रसाद ऐतिहासिक पुस्तकमाला और सूर्य कुमारी पुस्तकमाला का सम्पादन किया और नागरी प्रचारिणी पुस्तकमाला और सूर्य कुमारी पुस्तकमाला का सम्पादन किया और नागरी प्रचारिणी सभा के सभापति भी रहे।

जयपुर के राजपण्डित के कुल में जन्म लेने वाले गुलेरी जी का राजवंशों से घनिष्ठ संबंध रहा। वे पहले खेतड़ी नरेश जयसिंह के और फिर जयपुर राज्य के सामन्त-पुत्रों के अजमेर के मेयो कॉलेज में अध्ययन के दौरान अभिभावक रहे। सन् 1916 में उन्होंने मेयो कॉलेज में ही संस्कृत विभाग के अध्यक्ष का पद सँभाला। सन् 1920 में पं. मदन मोहन मालवीय के प्रबंध आग्रह के कारण उन्होंने बनारस आकर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राच्यविद्या विभाग के प्राचार्य और फिर 1922 में प्राचीन इतिहास और धर्म से संबंध मनीन्द्र चन्द्र नन्दी पीठ के प्रोफेसर का कार्यभार भी ग्रहण किया।

इस बीच परिवार में अनेक दुखद घटनाओं के आघात भी उन्हें झेलने पड़े। सन् 1922 में 12 सितम्बर को पीलिया के बाद तेज ज्वर से मात्र 39 वर्ष की अल्पायु में उनका देहावसान हो गया।

व्यावसायिक जीवन

39 वर्ष की जीवन-अवधि में उन्होंने कहानियाँ, लघु-कथाएँ, आख्यान, ललित निबन्ध, गम्भीर विषयों पर विवेचनात्मक निबन्ध, शोधपत्र, समीक्षाएँ, सम्पादकीय टिप्पणियाँ, पत्र विधा में लिखी टिप्पणियाँ, समकालीन साहित्य, समाज, राजनीति, धर्म, विज्ञान, कला आदि पर लेख। उनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध कहानी 'उसने कहा था' कहा प्रकाशन सरस्वती में 1915 ई. में हुआ। उन्होंने 'कछुआ धरम' और 'मारेसि मोहि कुठाऊँ' नामक निबंध और पुरानी हिन्दी नामक लेखमाला भी लिखी।

लेखक परिचय

आचार्य संदीप मालाकार

आचार्य संदीप मालाकार की स्नातक व स्नातकोत्तर शिक्षा राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान त्रिवेणी नगर जयपुर से हुई। इन्होंने शास्त्री (2001), शिक्षा शास्त्री (2003), आचार्य (2004), में करने के बाद UGC Net (73) कोड से (2007) में उत्तीर्ण की। इनकी हिन्दी व संस्कृत व्याकरण व साहित्य पर विशेषज्ञता है। इनका विभिन्न B.ed. महाविद्यालयों व कोचिंग संस्थानों में अध्यापन अनुभव 15 वर्षों का है। इसके अतिरिक्त इन्होंने विगत 10 वर्षों से संस्कृत व हिन्दी विषय से संबंधित विभिन्न पुस्तकों का लेखन कार्य किया है जिससे अनेक प्रतियोगी परीक्षाओं के छात्र लाभान्वित हुए हैं।

गणेश प्रजापत

गणेश प्रजापत का जन्म राजस्थान के जयपुर जिले के चाकसू तहसील थूणी अहिरान गांव में हुआ। ये बचपन से ही प्रतिभाशाली छात्रों की सूची में रहे है। ये Wifi study, Unacademy, Exampur, adda247 पर लाखों विद्यार्थियों को Online अध्ययन करवा चुके हैं। वर्तमान में Class 24 Rajasthan पर अध्ययन करवा रहे है।

इस पुस्तक में II ग्रेड की दृष्टि से रस, अलंकार, छन्द, हिन्दी साहित्य को महत्वपूर्ण उदाहरणों से समझाया गया है जो छात्रों के लिए बहुउपयोगी साबित होगा।

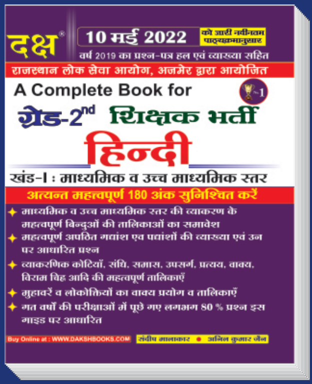

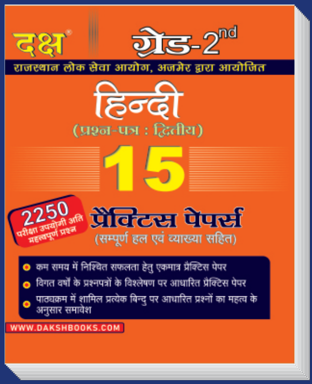

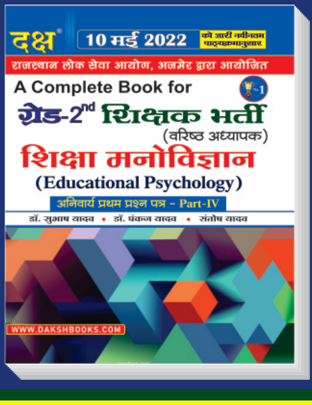

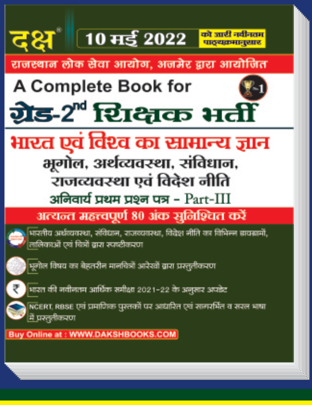

दक्ष प्रकाशन

(A Unit of College Book Centre)

A-19 सेठी कॉलोनी, जयपुर (राज.)

फोन नं. 0141-2604302

Code No. D-631 ₹ 740/-

इस पुस्तक को ONLINE खरीदने हेतु

WWW.DAKSHBOOKS.COM

पर ORDER करें

★★ FREE DELIVERY ★★